इकाई – (2) शौरसेनी का सामान्य परिचय

Q(1) शौरसेनी प्राकृत एवं उसकी विशेषताएं लिखें।

Ans– प्राकृत का महत्वपूर्ण भेद शौरसेनी प्राकृत है। यह शूरसेन (मथुरा) की भाषा है। इसका क्षेत्र शूरसेन के आस-पास रहा है। इस प्रकार शूरसेन या मथुरा के पास बोली जाने वाली भाषा शौरसेनी प्राकृत है।

शौरसेनी की उत्पत्ति शूरसेन की पालि-कालीन स्थानीय बोली से हुआ है। मध्यप्रदेश की भाषा होने के कारण इसे कुछ लोग संस्कृत की भाँति परिमार्जित भाषा मानते हैं क्योंकि मध्यप्रदेश उस समय संस्कृत का केन्द्र था, इसी कारण शौरसेनी उससे बहुत प्रभावित है। इस भाषा का सर्वाधिक प्रयोग भारतीय नाटकों में हुआ है। संस्कृत नाटकों की गद्य भाषा शौरसेनी है। इस का प्राचीनतम रूप अश्वघोष के नाटकों में मिलता है। मूलतः स्त्रियों का वार्तालाप शौरसेनी प्राकृत में पाया जाता है। राजशेखर कृत कर्पूरमंजरी भाषा स्वयं कालिदास के संस्कृत नाटकों की गद्य भाषा शौरसेनी प्राकृत है।

जैन दर्शन के अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का लेखन इसी भाषा में हुआ है। जैसे आचार्य कुन्द कुन्द का समय सार, प्रवचन सार नियमसार, अष्टपाहुड, रयणसार व कित्तिगंगे की भाषा शौरसेनी प्राकृत है। आचार्य नेमिचन्द सिद्धांत चक्रवर्ती की समस्त रचनाओं की भाषा शौरसेनी प्राकृत है जिसे जैन शौरसेनी भी कहा जाता है।

शौरसेनी की विशेषताएँ —

आचार्य हेमचन्द्र ने सिद्ध हेमशब्दानुशासन में शौरसेनी प्राकृत की अनेक प्रकार की विशेषताओं का उल्लेख किया है। जो इस प्रकार प्रमुख विशेषताएँ हैं।

(1) तो दोनादो शौरसेन्याम युक्तस्य ॥ 8/4/260 हेम.

शौरसेनी प्राकृत में अनादि में वर्तमान असंयुक्त त का द होता है जैसे —

एतस्मात् > एदाओ
वंदितम > वंदिद

(2) थो धः ॥ 8/4/267

शौरसेनी प्राकृत में थ के स्थान पर ध होता है। जैसे — कथितम् > कधिदं नाथ > नाधो

(3) वादेस्तावति ॥ 26 ॥

इसमें तावत शब्द आदि त कार का विकल्प से द कार होता है। जैसे — तावत > दाव

(4) आ आमन्त्र्ये

आ, आमन्त्र्ये सौ वेनो न ॥ 8/(4)263

शौरसेनी में इन न शब्दों से संबोधन की प्रथमा विभक्ति के एक वचन में विकल्प से इ न के स्थान पर आकार होता है। जैसे — भो कञ्चुकिन > भो कंचुइआ
सुखिन > सुहिया

(5) न वा र्यो य्यः ॥ 8/4/266

इसमें (र्य) के स्थान पर विकल्प से (य्य) और विकल्पाभाव से (ज्ज) आदेश होता है।
जैसे — कार्यम -> कय्यं कज्जं।